आदर्शवाद

आदर्शवाद ऐसी भावना है जो किसी व्यक्ति या समूह को अपने आस-पास व्याप्त मानकों की तुलना में उदात्त नैतिक मानक अपनाने के लिये प्रेरित करती है। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में आदर्शवाद राष्ट्रों या राज्यों के शासकों के बीच के संबंधों को अनुशासित करता है।

प्राचीन काल में युद्ध करना प्रचलित कार्य था परंतु समय बीतने के साथ-साथ वे मानदंड बन गए जो युद्ध के आचरणों को युद्ध-बंदियों के साथ, हारे हुए या आत्मसमर्पण करने वालों के साथ किये जाने वाले व्यवहार को विनियमित करते थे। नैतिक विचारकों ने युद्धों में होने वाली अनियंत्रित क्रूरता की निंदा की जिस कारण नैतिक सिद्धांतों के पालन में आदर्शवाद उन संधियों के लिये भी प्रासंगिक हो गया जिनसे युद्ध समाप्त हो जाते थे या दो शासकों के मध्य करारनामे हो जाते थे।

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के संदर्भ में काण्ट द्वारा की गई टिप्पणियों के माध्यम से आदर्शवाद को और स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है, जो कि निम्न है-

- कोई भी देश, दूसरे देश के आंतरिक मामलों में ज़बरदस्ती हस्तक्षेप नहीं करेगा।
- देशों को सामंती मालिक तथा मातहतों के सिद्धांत के अनुसार बाँटना घातक होगा।
- युद्ध के दौरान कोई भी देश विरोध के ऐसे कार्यों की अनुमति नहीं देगा जिनसे बाद में होने वाली शांति में विश्वास करना असंभव हो जाए।
- सरकारों को सेना तथा हथियारों पर खर्चों को कम करना चाहिये।

काण्ट की तरह 1920-30 के दशक में अनेक आदर्शवादियों ने अपने विचार प्रस्तुत किये। इनका उद्देश्य शांति को सुनिश्चित करना तथा एक अन्य विश्व युद्ध से बचना, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा समर्पित अंतर्राष्ट्रीय कानून की प्रणाली को विकसित करना, आदि था।

अतः अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में आदर्शवाद अंतर्राष्ट्रीय सरकारों के मध्य सामंजस्य की स्थापना एवं युद्धों को रोकने का सशक्त माध्यम हो सकता है।

आदर्शवाद अंतर्राष्ट्रीय संबंधों से युद्ध , भुखमरी, असमानता, अत्याचार, बल, दमन और हिंसा को समाप्त करके अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की दिशा में सुधार का पक्षधर है। इन बुराइयों को दूर करना मानव जाति का उद्देश्य है। आदर्शवाद तर्क , विज्ञान और शिक्षा पर निर्भर होकर इन बुराइयों से मुक्त विश्व के निर्माण की संभावना को स्वीकार करता है।

"अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में राजनीतिक आदर्शवाद विचारों के एक समूह का प्रतिनिधित्व करता है जो एक साथ युद्ध का विरोध करते हैं और नैतिक मूल्यों पर निर्भरता और अंतर्राष्ट्रीय

संस्थाओं और अंतर्राष्ट्रीय कानून के विकास के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के सुधार की वकालत करते हैं।"

"मानवीय खुशी से भरी दुनिया को प्राप्त करना मानव शक्ति से परे नहीं है।" -बर्ट्रेंड रसेल

आदर्शवादी दृष्टिकोण को समाज में विकासवादी प्रगति के सामान्य विचार और उदारवादी आदर्शवाद की भावना से बल मिलता है , जो अमेरिकी नीतियों के मूल में थी , खासकर युद्ध के बीच के वर्षों में। युद्ध के बीच के वर्षों (1919-39) के दौरान, अमेरिकी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन इसके सबसे प्रबल प्रतिपादक बने।

आदर्शवादी दृष्टिकोण , विश्व को एक आदर्श विश्व बनाने के वांछित उद्देश्य की प्राप्ति के साधन के रूप में नैतिकता की वकालत करता है। यह मानता है कि अपने संबंधों में नैतिकता और नैतिक मूल्यों का पालन करके , राष्ट्र न केवल अपना विकास सुनिश्चित कर सकते हैं, बल्कि विश्व को युद्ध , असमानता, निरंकुशता, अत्याचार, हिंसा और बल प्रयोग को समाप्त करने में भी मदद कर सकते हैं।

"आदर्शवादियों के लिए , राजनीति सुशासन की कला है , न कि संभव बनाने की कला। राजनीति घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर , अपने साथी मनुष्यों के लिए अच्छा जीवन और सम्मान प्रदान करती है।" - कूलम्बिस और वोल्फ

इस प्रकार आदर्शवाद अंतर्राष्ट्रीय वातावरण में मौजूद बुराइयों को दूर करके राष्ट्रों के बीच संबंधों में सुधार की आवश्यकता की वकालत करता है।

आदर्शवाद की मुख्य विशेषताएं:

1. मानव स्वभाव मूलतः अच्छा है और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में अच्छे कार्य करने में सक्षम है।

2. मानव कल्याण और सभ्यता की उन्नति सभी की चिंता है।

3. बुरा मानवीय व्यवहार बुरे वातावरण और बुरी संस्थाओं का परिणाम है।

4. पर्यावरण में सुधार करके बुरे मानवीय व्यवहार को समाप्त किया जा सकता है।

5. युद्ध संबंधों की सबसे खराब विशेषता है।

6. अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में सुधार करके युद्ध को समाप्त किया जा सकता है और किया जाना चाहिए।

7. अंतर्राष्ट्रीय संबंधों से युद्ध , हिंसा और अत्याचार को समाप्त करने के लिए वैश्विक प्रयासों की आवश्यकता है।

8. अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को ऐसे वैश्विक साधनों , विशेषताओं और प्रथाओं को समाप्त करने के लिए काम करना चाहिए जो युद्ध का कारण बनते हैं।

9. शांति, समृद्धि और विकास सुनिश्चित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय शांति , अंतर्राष्ट्रीय कानून और व्यवस्था को बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं का विकास किया जाना चाहिए।

आदर्शवाद के प्रमुख समर्थक महात्मा गांधी , बर्ट्रेंड रसेल, वुडरो विल्सन, एल्डस हक्सले, विलियम लैड, रिचर्ड कोबेन, मार्गरेट मीड आदि रहे हैं। वे अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को सत्ता और राष्ट्रीय हित के संघर्ष के रूप में देखने के यथार्थवादी दृष्टिकोण का कड़ा विरोध करते हैं और संबंधों में सुधार लाने तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंधों से युद्ध और अन्य बुराइयों को दूर करने के लिए तर्क, शिक्षा और विज्ञान के उपयोग की वकालत करते हैं।

यथार्थवाद

यथार्थवाद या राजनीतिक यथार्थवाद, अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों के शिक्षण की शुरुआत के बाद से ही अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों का प्रमुख सिद्धान्त रहा है।यह सिद्धान्त उन प्राचीन परम्परागत दृष्टिकोणों पर भरोसा करने का दावा करता है, जिसमें थूसीडाइड, मैकियावेली और होब्स जैसे लेखक शामिल हैं। प्रारम्भिक यथार्थवाद को आदर्शवादी सोच के खिलाफ एक प्रतिक्रिया के रूप में व्यक्त किया जा सकता है। यथार्थवादियों ने द्वितीय विश्व युद्ध के प्रकोप को आदर्शवादी सोच की कमी के एक सबूत के रूप में देखा था। आधुनिक यथार्थवादी विचारों में विभिन्न किस्में हैं, हालांकि, इस सिद्धान्त के मुख्य सिद्धान्तों के रूप में **राज्य नियन्त्रण वाद**, **अस्तित्व** और **स्वयं सहायता** को माना जाता है।

- **राज्य नियन्त्रण वाद/सांख्यबाद (Statism)**: यथार्थवादियों का मानना है कि राष्ट्र राज्य (Nation States) अन्तरराष्ट्रीय राजनीति में मुख्य अभिनेता होते हैं, इस प्रकार यह अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों का एक राज्य केन्द्रित (State Centric) सिद्धान्त है। यह विचार उदार (Liberal) अन्तरराष्ट्रीय सन्बम्धों के सिद्धान्तों के साथ विरोधाभास प्रकट करता है, जो गैर राज्य अभिनेताओं (Non-state Actors) और अन्तरराष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका को भी अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों के सिद्धान्तों में समायोजित करता है।

- **जीवन रक्षा/अस्तित्व (Survival)**: यथार्थवादियों का मानना है कि अन्तरराष्ट्रीय प्रणाली अराजकता के द्वारा संचालित है, जिसका अर्थ है कि वहाँ कोई केन्द्रीय सत्ता नहीं है, जो राष्ट्र राज्यों में सामंजस्य रख सके।इसलिए, अन्तरराष्ट्रीय राजनीति स्वार्थी (Self-interested) राज्यों के बीच सत्ता के लिए एक संघर्ष है।
- **स्वयं सहायता (Self-help)**: यथार्थवादियों का मानना है कि राज्य के अस्तित्व की गारण्टी के लिए अन्य राज्यों की मदद पर भरोसा नहीं किया जा सकता है, इसलिए राज्य को अपनी सुरक्षा स्वयं के बल पर ही करनी चाहिए।

यथार्थवाद में कई महत्वपूर्ण मान्यताएँ हैं। यथार्थवादी मानते हैं कि राष्ट्र - राज्य इस अराजक अन्तरराष्ट्रीय प्रणाली में ऐकिक (Unitary) व भौगोलिक आधारित अभिनेता (Actors) हैं, जहाँ कोई भी वास्तविक आधिकारिक विश्व सरकार के रूप में मौजूद नहीं है जो इन राष्ट्र-राज्यों के बीच अन्तः क्रिया या सहभागिताओं को विनियमित (Regulate) करने में सक्षम हो। दूसरे, यह अंतरसरकारी संगठनों (IGOs), अन्तरराष्ट्रीय संगठनों (IOs), गैर सरकारी संगठनों (NGOs), या बहुराष्ट्रीय कंपनियों (MNCs) के बजाय संप्रभु राज्यों (Sovereign states) को ही अन्तरराष्ट्रीय मामलों में प्राथमिक अभिनेता मानते हैं। इस प्रकार, राज्य ही, सर्वोच्च व्यवस्था के रूप में, एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा में रहते हैं। ऐसे में, एक राज्य अपने अस्तित्व को बनाए रखने, अपनी खुद की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए और इन प्राथमिक उद्देश्यों के साथ अपने स्वयं के स्वार्थ की खोज में एक तर्कसंगत स्वायत्त अभिनेता के रूप में कार्य करता है और इस तरह अपनी संप्रभुता और अस्तित्व की रक्षा करने का प्रयास करता है। यथार्थवादी मानते हैं कि राष्ट्र राज्य अपने हितों की खोज में, अपने लिए संसाधनों को एकत्र करना करने का प्रयास है और ये राज्यों के बीच के सम्बन्धों को सत्ता के अपने सम्बन्धित स्तरों द्वारा निर्धारित करते हैं। शक्ति का यह स्तर राज्य के सैन्य, आर्थिक और राजनीतिक क्षमताओं से निर्धारित होता है। **मानव स्वभाव यथार्थवादीयों** (*Human nature realists*) का मानना है, कि राज्य स्वाभाविक रूप से ही आक्रामक होते हैं अतः क्षेत्रीय विस्तार को शक्तियों का विरोध करके ही असीमाबद्ध किया गया है। जबकि दुसरे **आक्रामक/रक्षात्मक यथार्थवादीयों** (*Offensive/defensive realists*) का मानना है कि राज्य हमेंशा अपने अस्तित्व की सुरक्षा और निरन्तरता की चिन्ता से ग्रस्त रहते हैं। रक्षात्मक दृष्टिकोण एक सुरक्षा दुविधा (Security dilemma) की तरफ ले जाता है, क्योंकि जहाँ एक राष्ट्र खुद की सुरक्षा को बढ़ाने के लिए हथियार बनता है, तो वहीं प्रतिद्वन्द्वी भी साथ ही साथ समानान्तर लाभ प्राप्त करने की कोशिश करता है। इसलिए यह प्रक्रिया और अधिक अस्थिरता की ओर ले जा सकती है यहाँ सुरक्षा को केवल **शून्य राशि खेल/शून्य-संचय खेल** (ज़ीरो सम गेम्स) के रूप में देखा जा सकता है, जहाँ केवल सापेक्ष लाभ मिल सकता है।

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में यथार्थवाद या यथार्थवादी दृष्टिकोणः

राजनीतिक यथार्थवाद मैक्स वेबर , ई.एच. कार, फ्रेडरिक शुमान, निकोलस स्पाइकमैन, रीनहोल्ड नीबूर, अर्नोल्ड वोल्फर्स, केनेथ थॉम्पसन, जॉर्ज एफ. केनन, हंस जे. मोर्गेंथाऊ, हेनरी किसिंजर और कई अन्य लोगों के नामों से जुड़ा है। यथार्थवादी दृष्टिकोण अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के एक शक्ति-दृष्टिकोण का अनुसरण करता है।

राजनीतिक यथार्थवाद:

यथार्थवाद राजनीति को सत्ता के लिए संघर्ष मानता है और इसे शक्ति , सुरक्षा और राष्ट्रीय हित जैसे कारकों की मदद से समझाने का प्रयास करता है। शक्ति को एक मनोवैज्ञानिक संबंध के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसमें एक कर्ता दूसरे कर्ता के व्यवहार को नियंत्रित करने में सक्षम होता है। एक राजनीतिक कर्ता वह होता है जो हमेशा सत्ता के संदर्भ में परिभाषित अपने हितों की रक्षा करने का प्रयास करता है। राजनीतिक यथार्थवाद राजनीति में विवेक को मार्गदर्शक मानता है।

कूलम्बिस और वोल्फ यथार्थवाद की मूल विशेषता की व्याख्या करते हैं और कहते हैं , "तर्कसंगत तरीके से कार्य करना (अर्थात , अपने हित में कार्य करना) शक्ति प्राप्त करना है , अर्थात, दूसरों को नियंत्रित करने की क्षमता और इच्छा रखना है।"

राजनीतिक यथार्थवाद की प्रमुख विशेषताएँ:

1. इतिहास प्रमाण देता है कि मानवता स्वभाव से पापी और दुष्ट है।

2. शक्ति और प्रभुत्व की लालसा मानव स्वभाव का एक प्रमुख , अत्यंत महत्वपूर्ण और सर्वव्यापी तथ्य रहा है।

3. शक्ति के प्रति मानवीय प्रवृत्ति को समाप्त नहीं किया जा सकता।

4. सत्ता के लिए संघर्ष अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की अकाट्य और शाश्वत वास्तविकता है।

5. प्रत्येक राष्ट्र सदैव शक्ति के संदर्भ में परिभाषित राष्ट्रीय हित के लक्ष्यों को सुरक्षित करने का प्रयास करता है।

6. आत्म-संरक्षण वह कानून है जो सभी राज्यों के व्यवहार को हर समय नियंत्रित करता है।

7. राष्ट्र सदैव शक्ति चाहते हैं , शक्ति का प्रदर्शन करते हैं और शक्ति का प्रयोग करते हैं।

8. शांति को केवल शक्ति संतुलन , सामूहिक सुरक्षा , विश्व सरकार , कूटनीति , गठबंधन आदि जैसे साधनों के माध्यम से शक्ति प्रबंधन द्वारा ही संरक्षित किया जा सकता है।

डॉ. मोहिंदर कुमार का मानना है कि , "यथार्थवादी दृष्टिकोण के अंतर्गत मूल मान्यता यह है कि राष्ट्रों के बीच किसी न किसी रूप में प्रतिद्वंद्विता और संघर्ष स्वाभाविक है , न कि महज एक संयोग।"

हितों की पूर्ति हेतु कार्य करना राजनीतिक है। इसकी जड़ें मानव स्वभाव में हैं। अपने हितों की पूर्ति हेतु सत्ता प्राप्त करना प्रकृति के "नियमों" के मूल निर्देशों का पालन करना है। यह सर्वोच्च नैतिक और कानूनी सिद्धांत है। यह एक व्यावहारिक और मान्य सिद्धांत है जो संपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को समझने और राष्ट्रीय हितों की रक्षा हेतु नीतियों के निर्माण और कार्यान्वयन में सहायक हो सकता है। यथार्थवाद समग्र अंतर्राष्ट्रीय वास्तविकता का एक यथार्थवादी और समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। हंस मोर्गेंथाऊ ने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का एक यथार्थवादी सिद्धांत प्रस्तुत किया है , जो उनके अनुसार , राष्ट्रों के बीच राजनीति के संपूर्ण ढाँचे की व्याख्या कर सकता है। वे हमारे समय के सभी यथार्थवादियों में सबसे लोकप्रिय हैं।